

गिरते मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना, भारतीय संस्कृति की प्रगति एवं भावी-पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण हेतु प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़, पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान द्वारा दिये गये प्रवचनों के विषय जिसे Youtube पर Channel24+ News Punruthan लिंक डालकर देखा जा सकता है प्रतिदिन प्रति विषय समय : 30 मिनट

क्र. सं.	प्रवचन का विषय	क्र. सं.	प्रवचन का विषय	क्र. सं.	प्रवचन का विषय
1.	संस्कृति एवं संस्कार	34.	प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति	67.	ज्ञान का सार आचार
2.	भारतीय धर्म-दर्शन	35.	जीवन विज्ञान: जीने की कला	68.	तमो गुण-रजो गुण-सतो गुण
3.	वसुधैव कुटुम्बकम्	36.	जैन धर्म का पर्यावरण संरक्षण का सिद्धान्त	69.	प्रणायाम द्वारा स्वास्थ्य
4.	भारतीय कृषि परम्परा	37.	निश्चय एवं व्यवहार दृष्टि	70.	ध्यान क्यों करें?
5.	दुःख का कारण-अज्ञान	38.	परोपकार की महिमा	71.	जीवन का आधार-जीवन शैली
6.	ईश्वर एवं आत्मा	39.	गुरुकुल शिक्षा प्रणाली	72.	प्रणाम की महिमा
7.	विद्या ददाति विनयम्	40.	वैश्वीकरण का विश्लेषण	73.	जगत् निर्दोष-सब मेरा दोष
8.	पर्यावरण संरक्षण	41.	आतंकवाद समस्या एवं समाधान	74.	टकराव टालिए
9.	जैन दर्शन के सिद्धान्त	42.	मानसिक स्वास्थ्य : कारण निवारण	75.	सहनशीलता द्वारा समग्र समाधान
10.	योग द्वारा स्वास्थ्य प्रबंधन	43.	शारीरिक स्वास्थ्य रख-रखाव	76.	वैचारिक प्रदूषण की रोकथाम
11.	महात्मा गांधी एवं अहिंसा	44.	बाल पीढ़ी में संस्कार निर्माण	77.	जैसा अन्न वैसा मन
12.	सांख्य दर्शन के सिद्धान्त	45.	वर्तमान में गीता की प्रासंगिकता	78.	मानवीय मूल्यों का झस
13.	मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना	46.	भावनात्मक स्वास्थ्य क्या हैं?	79.	भारत सोने की चिड़िया
14.	पुरुषार्थ चतुष्टय	47.	भीतर एवं बाहर का सच	80.	आध्यात्मिक एवं भौतिक समृद्धि
15.	जैन दर्शन का कर्म सिद्धान्त	48.	समाज सेवा का महत्त्व	81.	शिक्षा द्वारा सम्यता
16.	गीता का सन्देश	49.	मानव जीवन का सार	82.	प्राच्य एवं पाश्चात्य संस्कृति
17.	व्यक्तित्व विकास	50.	अध्यात्म का आनन्द	83.	कर्म एवं जीन्स का अन्तर्सम्बन्ध
18.	भारतीय संस्कृति में सेवा का महत्त्व	51.	मनुष्य प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी	84.	कार्यात्सर्ग द्वारा मानसिक शांति
19.	दान की महिमा	52.	बंधन एवं मुक्ति	85.	शवास प्रेक्षा के प्रयोग
20.	सर्व धर्म समभाव	53.	अध्यात्म एवं विज्ञान	86.	रंगों का स्वभाव पर प्रभाव
21.	मानवीय एकता के सूत्र	54.	टी.वी. मोबाइल संस्कृति	87.	योग भगावे रोग
22.	शिक्षा द्वारा भावनात्मक विकास	55.	सबको साथ लेकर चलने की कला	88.	विद्ववान् एवं पंडित का तुलनात्मक अध्ययन
23.	भगवान महावीर की अहिंसा	56.	आत्मा की पवित्रता	89.	विद्यायक विचार से प्रगति
24.	पांच महाव्रत	57.	भाग्य एवं पुरुषार्थ	90.	बाहरी एवं भीतरी पवित्रता
25.	धर्म हमें क्या देगा?	58.	जगत नियंता व्यवस्थित शक्ति	91.	स्वच्छता ईश्वर का दूसरा नाम
26.	सुखी रहने के उपाय	59.	भारतीय दर्शनों में ध्यान की अवधारणा	92.	वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोष एवं फायदे
27.	परस्पररोपग्रहो जीवानाम्	60.	वेदान्त दर्शन	93.	भारतीय वर्ण व्यवस्था
28.	शांतिपूर्ण सहअस्तित्व	61.	उपनिषदों पर प्रवचन	94.	सृष्टि पंचभूतात्मक
29.	योग द्वारा मोक्ष	62.	बौद्ध एवं जैन धर्म में मानवतावाद	95.	शिक्षा का निजीकरण
30.	पतंजलि का अष्टांग योग	63.	अणुव्रत आचार संहिता	96.	भूगते उसकी भूल
31.	उत्तरदायित्व एवं अधिकार	64.	स्वामी विवेकानन्द का दर्शन	97.	हुआ सो न्याय
32.	सेवा का महत्त्व	65.	प्राकृतिक चिकित्सा के लाभ	98.	वरिष्ठ नागरिक के दायित्व एवं अधिकार
33.	भारतीय दर्शनों में मोक्ष की अवधारणा	66.	जैन धर्म का षट्जीव निकाय	99.	नशा नाश का द्वार है
				100.	अध्यात्म एवं नैतिकता

गिरते मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना, भारतीय संस्कृति की प्रगति एवं भावी-पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण हेतु प्रो. (डॉ. ) सोहन राज तातेड़, पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान द्वारा दिये गये प्रवचनों के विषय जिसे **Youtube पर Channel 24+ News Punruthan** लिंक डालकर देखा जा सकता है प्रतिदिन प्रति विषय समय : 30 मिनट

क्र. सं.	प्रवचन का विषय	क्र. सं.	प्रवचन का विषय	क्र. सं.	प्रवचन का विषय
101.	जाको राखे सांइया मार सके ना कोय	134.	आत्मशुद्धि साधनम् धर्मः	167.	भ्रूण हत्या महापाप
102.	जिन खोजा तिन पांइया	135.	संस्कारों का बीजारोपण	168.	बढ़ती जनसंख्या चिन्ता का कारण
103.	अतिथि देवो भवः	136.	वरिष्ठ नागरिक : अनुभव का खजाना	169.	सामुदायिक आदर्श जीवन
104.	आदर्श जीवन शैली के सूत्र	137.	टूटते परिवार	170.	अनुशासन से आत्म विश्वास
105.	अहिंसा सक्भूय खेमंकरी	138.	साम्प्रदायिक सौहार्द	171.	दुर्घटना से देर भली
106.	जगत् कल्याण	139.	सद्भावना	172.	वाणी संयम
107.	एडरुट एवरोवेटर एवरीव्येहर	140.	नैतिकता	173.	जीवन में सदाचार
108.	आत्म साक्षात्कार	141.	नशा मुक्ति	174.	विरोध, विरोध के लिए नहीं : विकास के लिए
109.	राम राज्य	142.	माता पिता : गृहस्थ के भगवान	175.	महाव्रत और अणुव्रत
110.	प्रेम सबसे बड़ा रसायन	143.	प्रतिरोधक शक्ति	176.	ईच्छा परिमाण
111.	आमामंडल	144.	योग द्वारा समग्र स्वास्थ्य	177.	भोगवादी संस्कृति के नुकसान
112.	अनेकातः तीसरा नेत्र	145.	महात्मा गांधी का ट्रस्टीशिप सिद्धान्त	178.	गाय की सुरक्षा : राष्ट्र सुरक्षा
113.	कुंडलिनी जागरण	146.	एकला चालो रे	179.	सर्व शिक्षा अभियान
114.	गुरु बिन ज्ञान नहीं	147.	पुण्य एवं पाप	180.	भारतीय दर्शन में मानवीय दृष्टिकोण
115.	चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा	148.	धारण-कार्य सिद्धान्त	181.	कर्मशास्त्र का वैज्ञानिक विवेचन
116.	समय बड़ा बलवान	149.	कर्म बंधन का कारणः कर्ताभाव	182.	भारतीय उत्सव एवं पर्व
117.	शरीर प्रेक्षा	150.	महात्मा गांधी का सत्याग्रह	183.	विवाह एक सामाजिक आवश्यकता
118.	चेतन, अवचेतन, अचेतन मन	151.	अर्जन के साथ विसर्जन	184.	तप जीवन का श्रृंगार
119.	लेश्या ध्यान	152.	सत्यं, शिवं, सुन्दरं	185.	सादा जीवन उच्च विचार
120.	ज्योति केन्द्र प्रेक्षा	153.	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	186.	कष्ट सहिष्णुता
121.	चित्त और मन	154.	नारी सशक्तिकरण	187.	मोक्ष का साधन : कषाय मुक्ति
122.	कड़ी मेहनत का मुकाबला नहीं	155.	दहेज दानव : एक बुराई	188.	आत्मशुद्धि के उपाय
123.	आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व	156.	रोजगार के साधन कुटीर उद्योग	189.	तनाव मुक्ति : कारण, निवारण
124.	भारतीय दर्शनों में जगत् की अवधारणा	157.	जीओ और जीने दो	190.	सफलता का राज : शिष्टाचार
125.	जैन दर्शन में जगत् की अवधारणा	158.	काल करे सो आज कर	191.	राष्ट्रहित सर्वोपरि
126.	अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा	159.	दरिद्र सेवा – नारायण सेवा	192.	ज्वलंत समस्या : प्रदूषण
127.	लघुता एवं प्रभुता	160.	भारत की विशेषता : विभिन्नता में एकता	193.	आतंकवाद : कारण, निवारण
128.	आलस्याणां शरीरस्थो महान् रिपु	161.	जातिवाद का बढ़ता जहर	194.	खाद्य संयम
129.	निष्काम कर्म	162.	चुनाव शुद्धि	195.	संयम : खलु जीवनम्
130.	चरेवेति- चरेवेति	163.	प्रजातन्त्र : स्वच्छ तंत्र	196.	वानप्रस्थ जीवन शैली
131.	सामायिक, आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान	164.	स्वस्थ तन, स्वस्थ मन	197.	माँ बच्चे की प्रथम पाठशाला
132.	यम-नियम	165.	सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा	198.	ऑनैस्टी इज द बेस्ट पालिसी
133.	भारतीय दर्शनों में आत्मा की अवधारणा	166.	लालच बुरी बला	199.	बचत करने के फायदे
				200.	वरिष्ठ नागरिकों के दायित्व एवं अधिकार

गिरते मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना, भारतीय संस्कृति की प्रगति एवं भावी-पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण हेतु प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़, पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान द्वारा दिये गये प्रवचनों के विषय जिसे Youtube पर Channel 24+ News Punruthan लिंक डालकर देखा जा सकता है 10 प्रतिदिन प्रतिविषय समय : 30 मिनट

क्र. सं.	प्रवचन का विषय	क्र. सं.	प्रवचन का विषय	क्र. सं.	प्रवचन का विषय
201.	अन्तः समीक्षा	234.	बदले की भावना से बचें	267.	जीवन एक : दृष्टि अनेक
202.	जीवनोपयोगी तत्व : उपशम और क्षमा	235.	अध्यात्म की ओर कैसे बढ़ें	268.	प्रवृत्ति, निवृत्ति और हित निर्धारण
203.	धर्माचारण का प्रमुख अंग : दान	236.	आभूषण भार स्वरूप है	269.	आग्रहीन गहन चिंतन का द्वार हमेशा खुला रहे
204.	मानव की रुचि- एक चिन्तन	237.	वस्तु की अनेक धर्मात्मकता	270.	युवा शक्ति का सही नियोजन
205.	क्षमा वीरस्य भूषणम्	238.	ध्येय जीवन का निर्माता	271.	स्वतन्त्रता प्राप्ति और फलितार्थ
206.	अपना पुरुषार्थ दें, परमार्थ को	239.	धर्म का द्वार सभी के लिए	272.	धर्म का आन्तरिक संदेश
207.	भारत राष्ट्र और सन्तो का संदेश	240.	समत्वपूर्ण जीवन	273.	भोगवाद का समाधान-त्याग
208.	भक्ति की रचनात्मकता	241.	सिद्धान्त और जीवन	274.	सुसंस्कारों द्वारा जीवन में शान्ति
209.	भाव शक्ति	242.	प्रतिष्ठा का व्यामोह	275.	सार्थक जीवन जीना : एक तप
210.	मौलिक सौन्दर्य	243.	आस्था हमारा सम्बल	276.	नियमबद्ध जीवन आज की आवश्यकता
211.	स्वाध्याय का महत्त्व	244.	व्यक्ति का अपना भाव जगत्	277.	अज्ञानता से बढ़कर कोई दुःख नहीं
212.	सुख और दुःख का अन्तर्दर्शन	245.	चेतना और मन	278.	परमार्थ : स्वार्थ से ऊपर
213.	व्यथा नहीं व्यवस्था करो	246.	आत्मकर्तृत्ववाद	279.	हठ सकल्प : सफलता की कुंजी
214.	मानव : युग निर्माता	247.	धर्म और अर्थ का समन्वय	280.	मानव जीवन का अभिशाप : नशा
215.	न्यायपूर्ण बनो	248.	दुखों की जड़ वाक् असंयम	281.	आत्मा में ही परमात्मा का वास
216.	सपना कभी ना अपना	249.	समय और हम	282.	समभाव में शान्ति
217.	जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	250.	सच्चरित्र का यथार्थ	283.	अति आधुनिकता संस्कृति के लिए घातक
218.	बात कम, काम ज्यादा	251.	परमार्थ की उपेक्षा डुबो देगी	284.	कर्मफल अपरिहार्य है
219.	क्या निर्लज्जता ही आधुनिकता है	252.	आडम्बर प्रिय नहीं, धर्म प्रिय बनें	285.	धर्म, चरित्र निर्माण में उपयोगी
220.	सद्ज्ञान : सुख का मूल	253.	समूहिक हित चिंतन	286.	जीवन में विधायक परिवर्तन
221.	संकीर्णता छोड़ो, सेवा करो	254.	मौन और उसकी शक्ति	287.	पापी से नहीं पाप से घृणा करो
222.	ज्योतिर्मय जीवन की प्रक्रिया	255.	जीवन का दिव्य गुण : शील	288.	सन्मार्ग से जीवन सुखी
223.	जागो फिर एक बार	256.	जीवन दर्शन और प्रदर्शन	289.	करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुज्ञान
224.	जब रक्षक बने भक्षक	257.	मोह मुक्त हो बुद्धि	290.	स्वस्थ जीवन शैली के सूत्र
225.	यथार्थ दृष्टिकोण	258.	प्रशंसा नहीं प्रस्तुति करो	291.	संग्रह से अशांति
226.	हम और हमारा समाज	259.	भारत में किसानों की दुर्दशा	292.	अनासक्त भाव से ही मुक्ति सम्भव
227.	जो चलता है उसको नमन्	260.	वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा उन्नत खेती	293.	राष्ट्र धर्म भी धर्म का एक अंग
228.	महान् कौन?	261.	अति संग्रह की लालसा से बचें	294.	देशरक्षा का वास्तविक प्रहरी कौन?
229.	अतिभावुकता से बचे	262.	तनाव और उसका समाधान	295.	अपना निर्माण अपने से
230.	शुभ का हो वरण	263.	जन भावनाओं का स्वागत	296.	चिन्ता नहीं चिन्तन करो
231.	राजनीति स्वार्थों के घेरे में	264.	भाव शुद्धि द्वारा व्यवहार शुद्धि	297.	व्यक्ति की पहचान सद् संगति से
232.	विवेगे धर्म : माहिए	265.	मानव क्षुब्ध का नहीं विराट का वरण करे	298.	समस्त धर्मों का सार : मानवता
233.	धर्म और धार्मिक	266.	चेतना का उध्वरोहण कैसे?	299.	स्वास्थ्य के लिए व्रत आवश्यक
				300.	सद्गुरु से सत्य प्रकाश